मदों में लघु बचतें, भविष्य निधियां और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSUs) में शेयरों की बिक्री से होने वाली प्राप्तियां सम्मिलित होती हैं।

- **पूंजीगत व्यय:** ये सरकार के ऐसे व्यय होते हैं जिनसे भौतिक या वित्तीय परिसंपत्तियों का सृजन होता है या वित्तीय देनदारियों में कमी आती है। इसमें भूमि, भवन, मशीनरी, उपकरण के अधिग्रहण पर व्यय एवं शेयरों में निवेश तथा केंद्र सरकार द्वारा राज्यों व संघ राज्य क्षेत्रों को प्रदत्त ऋण और अग्रिम राशि शामिल होती हैं।

अर्थव्यवस्था में पूंजीगत व्यय में वृद्धि का महत्व:

- **पूंजीगत व्यय** सरकारी व्यय का वह भाग होता है जो स्कूल, कॉलेजों, अस्पताल, सड़क, पुल, बांध, रेलमार्ग, विमानपत्तन और समुद्री पत्तन जैसी परिसंपत्तियों के निर्माण पर व्यय होता है। यह अवसंरचना और परिसंपत्ति सृजन **तीव्र आर्थिक विकास हेतु** महत्वपूर्ण है।
- पूंजीगत व्यय में वृद्धि **रोजगार सृजन** में सहायता करती है और अर्थव्यवस्था में **रोजगार की रूपरेखा में संरचनात्मक परिवर्तन** को प्रेरित करती है।
- पूंजीगत व्यय में वृद्धि, **आय वितरण और समाज में आर्थिक असमानता को समाप्त करने में भी सहायता करती है** क्योंकि सृजित की गयी अवसंरचना समाज के प्रत्येक वर्ग को लाभ प्रदान करती है।
- पूंजीगत व्यय में सरकार द्वारा निवेश भी सम्मिलित होता है जिससे **भविष्य में लाभ और लाभांश प्राप्त होता है**।

भारत में, परिसंपत्तियों के सृजन पर अत्यधिक निम्न व्यय हेतु केंद्र सरकार व राज्य सरकारों दोनों की आलोचना की गई है। उदाहरण के लिए केंद्र सरकार का 85-90 प्रतिशत व्यय राजस्व खाते में सम्मिलित होता है। केंद्र सरकार के उच्च राजस्व व्यय को प्राय: निम्न आर्थिक संवृद्धि हेतु दोषी ठहराया जाता रहा है। अतः, भारत जैसे देश में पूंजीगत व्यय और क्षमता निर्माण में वृद्धि की अत्यधिक आवश्यकता है।

9. *Bring out the major factors influencing inflation in India.*

भारत में मुद्रास्फीति को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों को स्पष्ट कीजिए।

दृष्टिकोण:

- मुद्रास्फीति शब्द को परिभाषित करते हुए उत्तर आरंभ कीजिए।
- मुद्रास्फीति को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का उल्लेख कीजिए।
- उचित निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

मुद्रास्फीति, अर्थव्यवस्था में सामान्य कीमत स्तर में सतत वृद्धि तथा किसी निश्चित समयावधि में मुद्रा की क्रय शक्ति में गिरावट को संदर्भित करती है। भारत में मुद्रास्फीति को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक निम्नलिखित हैं:

मांग प्रेरित कारक: ये कारक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की मांग में वृद्धि हेतु उत्तरदायी होते हैं। इनमें से कुछ निम्नानुसार हैं:

- **सरकारी व्यय में वृद्धि:** इससे वस्तुओं और सेवाओं की मांग में वृद्धि होती है तथा इसके परिणामस्वरूप उनकी कीमतों में वृद्धि होती है। यदि उत्पादन क्षमता में मांग में हुई वृद्धि के अनुसार वृद्धि नहीं हो पाती है तो परिणामस्वरुप मुद्रास्फीति उत्पन्न होती है।
- **मुद्रण के माध्यम से घाटे का वित्तपोषण:** सरकार अपने व्यय की पूर्ति हेतु नवीन मुद्रा का मुद्रण कर सकती है, हालांकि इसका मुद्रा स्फीतिकारी प्रभाव भी उत्पन्न हो सकता है। मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि से लोगों की क्रय शक्ति में वृद्धि होती है, जो संपूर्ण मांग में ऊर्ध्वाधर वृद्धि करके कीमत वृद्धि में योगदान करती है।
- **बढ़ती जनसंख्या:** बढ़ती जनसंख्या द्वारा मांग में वृद्धि, कीमतों को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में कार्य कर सकती है, विशेषकर जब आपूर्ति मांग को पूरा करने में अक्षम होती है।
- **काला धन:** इससे वस्तुओं की मांग में वृद्धि होती है, जिससे आवश्यक वस्तुओं की व्यापक जमाखोरी और कालाबाजारी का मार्ग प्रशस्त होता है। इससे कीमत स्तर में और अधिक वृद्धि हो जाती है।